डॉ. वसंत केशव मोरे,
भूतपूर्व अध्यक्ष,
हिन्दी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर - ४१६ ००४
महाराष्ट्र ।

प्र मा ण प त्र

मैं प्रमाणित करता हूँ कि श्री जगन्नाथ आबासो पाटील ने मेरे निर्देशन में "रांगेय राघव के 'कब तक पुकारूँ' उपन्यास में आँचलिकता" लघु-शोध प्रबन्ध शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर को एम्. फिल्. उपाधि के लिए लिखा है। यह कार्य पूर्व योजनानुसार सम्पन्न हुआ है। शोधार्थी ने मेरे सुझावों का पूर्णत: पालन किया है। जो तथ्य प्रबन्ध में प्रस्तुत किये है, मेरी जानकारी के अनुसार सही है।

निर्देशक
(डॉ. वसंत केशव मोरे)

कोल्हापुर ।
तिथि । १०। ७। १९९५।

Head, Hindi Dept.
Shivaji University,
Kolhapur - 416 004.

प्रख्यापन

यह लघु-शोध प्रबन्ध मेरी मौलिक रचना है, जो एम्.फिल्. के लघु-प्रबन्ध के रूप में प्रस्तुत की जा रही है। यह रचना इससे पहले इस विश्वविद्यालय या अन्य किसी विश्वविद्यालय की किसी उपाधि के लिए प्रस्तुत नहीं की गयी है।

(श्री जगन्नाथ आबासो पाटील)

कोल्हापुर।

तिथि। १०। ७। १९९५।

प्राक्कथन

स्वातंत्र्योत्तर कालीन साहित्य में आँचलिक उपन्यास एक लोकप्रिय विधा है। उपन्यास साहित्य को नई दिशा एवं नए-संदर्भ देनेवाली इस नवीनतम् प्रवृत्ति ने उपेक्षित-अँचलों और शोषित पीड़ित समाज के विद्रोही स्वरों को बुलन्द किया है।

मै देहात में रहनेवाला हूँ। अत: वहाँ के अभाव तथा स्थित समस्याओं को अनुभव कर चुका हूँ। जब एम.फिल.की उपाधि के हेतु लघु-शोध प्रबन्ध के लिए विषय चुनने की बात आयी तो मेरा ध्यान रांगेय राघव के ` कब तक पुकारूँ ` उपन्यास की ओर आकृष्ठ हो गया। क्योंकि यह सफल आँचलिक उपन्यास है। इस उपन्यास में आँचलिकता की सभी विशेषताएँ,अँचल में उत्पन्न समस्याओं का हूबहू चित्रण,उनकी अंध:श्रध्दाएँ, रूढि-परम्परा, खान-पान,रहन-सहन,तीज - त्योहार आदि का चित्रण लेखक ने मार्मिक ढंग से किया है। अत: मैंने रांगेय राघव का ` कब तक पुकारूँ ` उपन्यास एम.फिल.के अनुसंधान के लिए चुना।

रांगेय राघव के साहित्य पर अब तक बारह शोधकर्ताओं ने शोधकार्य किया है। डॉ.प्रकाश पित्तल ने ` डॉ.रांगेय राघव : आलोचना और अनुवाद ` शीर्षक के अन्तर्गत आगरा विश्वविद्यालय में सन १९६८ को अपना शोध-प्रबन्ध पूरा किया। डॉ.विश्वम्भर व्यास ने ` डॉ.रांगेय राघव : जीवन और कार्य ` शीर्षक के अन्तर्गत उदयपुर विश्वविद्यालय में सन १९६८ को अपना शोध-कार्य पूरा किया। डॉ.लालसाहब सिंह ने ` डॉ.रांगेय राघव : और उनके उपन्यास ` शीर्षक के अन्तर्गत बम्बई विश्वविद्यालय में सन १९७२ को अपना शोध-प्रबन्ध पूरा किया। डॉ. आर.के.चतुर्वेदी ने ` कथाकार रांगेय राघव ` शीर्षक के अन्तर्गत आगरा विश्वविद्यालय में सन १९७५ को अपना शोध-प्रबन्ध पूरा किया।

के.पी.वर्मा ने ' रांगेय राघव के उपन्यास: प्रवृत्तियाँ और प्रेरणास्त्रोत' शीर्षक के अन्तर्गत राजस्थान विश्वविद्यालय में सन १९७५ को अपना शोध-प्रबन्ध पूरा किया। श्री ताराप्रकाश जोशी ने 'डॉ.रांगेय राघव के साहित्य में मानवतावाद' शीर्षक के अन्तर्गत राजस्थान विश्वविद्यालय में सन १९७५ को अपना शोधकार्य पूरा किया। श्रीमती शीला दोषी ने 'डॉ.रांगेय राघव के उपन्यास' शीर्षक के अन्तर्गत विक्रम विश्वविद्यालय में सन १९६२ को अपना शोध-प्रबन्ध पूरा किया। एम.एल.उपाध्याय ने ' रांगेय राघव - जीवन और काव्य' शीर्षक के अन्तर्गत विक्रम विश्वविद्यालय में सन १९६४ को अपना शोध-कार्य पूरा किया। जुहुपतिसिंह ने 'रांगेय राघव का गद्य साहित्य' शीर्षक के अन्तर्गत विक्रम विश्वविद्यालय में सन १९६४ को अपना शोध-प्रबन्ध पूरा किया। डॉ.कमलाकर गंगावणे ने ' कथाकार रांगेय राघव' शोर्षक के अन्तर्गत मराठवाडा विश्वविद्यालय में अपना शोधकार्य पूरा किया। डॉ.प्रभूलाल डी.वैश्य ने 'डॉ.रांगेय राघव के उपन्यासों में युगचेतना' शोर्षक के अन्तर्गत मराठवाडा विश्वविद्यालय में अपना शोध-प्रबन्ध पूरा किया। निर्मल गुप्ता ने 'रांगेय राघव की नाटयकला' शीर्षक के अन्तर्गत मराठवाडा विश्वविद्यालय में अपना शोध-कार्य पूरा किया। रांगेय राघव नई पीढी के आँचलिक उपन्यासकारों में सबसे सशक्त उपन्यासकार है। परन्तु अब तक किसी भी शोधकर्ताओं ने राघव जी के उपन्यासों पर इस दृष्टि से स्वतंत्र रूप से शोधकार्य नहीं किया है। प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध इस अभाव की पूर्ति का प्रयास है।

इस विषय पर अनुसंधान करते समय प्रारंभ में मेरे सामने निम्न प्रश्न थे --

१) क्या 'कब तक पुकारूँ' सफल आँचलिक उपन्यास है ?

२) 'कब तक पुकारूँ' उपन्यास का उद्देश्य क्या है ?

३) क्या 'कब तक पुकारूँ' शीर्षक सार्थक है ?

उपर्युक्त प्रश्नों का विवेचन करने के उपरान्त निष्कर्षों के रूप में जो तथ्य प्राप्त हुऐ वे उपसंहार में दिऐ हैं।

अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से मैंने अपने शोध-प्रबन्ध को निम्नांकित चार अध्यायों में विभाजित कर अपने विषय का विवेचन किया है।

शोध-प्रबन्ध के प्रथम अध्याय में रांगेय राघव का जीवन परिचय दिया है। साहित्यकार तथा उसकी कृतियों में परस्पर संबंध बना रहता है। साहित्यकार के व्यक्तित्व का प्रभाव उसके साहित्यपर पड़ता है। अत: राघव जी के व्यक्तित्व एवं उनके व्यक्तित्व-गठन में उनके परिवार का योगदान, उनका जन्म, बचपन, शिक्षा एवं कृतित्व को इस अध्याय में देखा गया है। साथ ही आपके साहित्य सृजना का पाठकों से परिचय हो, इस दृष्टि से मैंने आपके साहित्य विधाओं की संक्षेप में सूची दी है।

द्वितीय अध्याय में आँचलिक उपन्यास साहित्य की विशेषताओं पर प्रकाश डालने का प्रयास किया है। साथ-ही-साथ आँचलिक उपन्यासों के तत्वों की चर्चा की है। अन्त में निष्कर्ष दिया है।

तृतीय अध्याय में आँचलिक उपन्यास साहित्य का इतिहास क्रम से दिया है। इसके साथ आँचलिक उपन्यासों की परिभाषाएँ और आँचलिकता के प्रकारों की चर्चा की है।

चतुर्थ अध्याय में रांगेय राघव के `कब तक पुकारूँ` उपन्यास में आँचलिकता देखी है। आँचलिक उपन्यास के सभी तत्वों को लेकर आँचलिकता ढूँढने का प्रयास किया है। इसमें कथावस्तु, पात्र, कथोपकथन, देशकाल और वातावरण, भाषाशैली और उद्देश्य आदि तत्वों की चर्चा की है।

पंचम अध्याय उपसंहार का है। पूर्व विवेचित अध्यायों के वैज्ञानिक पध्दति से निकाले गएँ निष्कर्ष संक्षिप्त रूप में उपसंहार में दिए है। अन्त में संदर्भ ग्रंथ सूची दी है।

प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध को सम्पन्न बनाने में निम्नांकित ग्रंथालयों का बहुमूल्य योगदान रहा है --

१) ग्रंथालय, शिवाजी विश्वविद्यालय,कोल्हापुर ,

२) ग्रंथालय, एस.के.पाटील महाविद्यालय, कुरूंदवाड ।

इन ग्रंथालयों के ग्रंथपाल एवं कर्मचारियों का मैं हृदय से आभारी हूँ ।

इस कार्य को सम्पन्न बनाने में मुझे जिन विद्वानों का मार्गदर्शन प्राप्त हुआ है उनके प्रति आभार प्रकट करना मैं अपना दायित्व समझता हूँ । किसी भी विषय पर विशेष अध्ययन करना वैसे कठिन बात है । ` कब तक पुकारूँ ` आँचलिक उपन्यास है । इसके विविधांगी पक्षों को देखने के लिए,उसपर अध्ययन करने के लिए और यह लघु-शोध प्रबन्ध पूर्ण करने में मेरे श्रध्देय गुरूवर्य डॉ.व्ही.के.मोरे जी, भूतपूर्व अध्यक्ष,हिन्दी विभाग,शिवाजी विश्वविद्यालय,कोल्हापुर ने अनमोल सहयोग दिया है । उनके प्रति कृतज्ञ होना मेरा परमधर्म है । आपके सहयोग के बिना यह कार्य सम्पन्न होना असंभव था । प्रस्तुत लघु-शोध प्रबन्ध आप ही के सुयोग्य निर्देशन का परिणाम है । आपके इस अनुग्रह से ऋण होना मेरे लिए असंभव है ।

डॉ.शंकर वसंत मुदगल,अध्यक्ष,हिन्दी विभाग,एस.के.पाटील महाविद्यालय, कुरूंदवाड, के निरन्तर प्रेरणा तथा प्रोत्साहन से मेरा कार्य अत्यंत प्रशस्त और सरल हुआ उनका मैं ऋणी हूँ । डॉ.अर्जुन चव्हाण, डॉ.पी.एस.पाटील,प्रा.तिवले, प्रा.वेदपाठक, प्रा.श्रीमती जाधव ने समय-समय पर मुझे प्रोत्साहित किया उनके प्रति आभार प्रकट करना मैं अपना उत्तरदायित्व समझता हूँ । इसके साथ-ही-साथ मेरे पूज्य भाई और भाभी जिन्होंने मुझे यहाँ तक आने का मौका दिया उनका उत्तरदायित्व मैं कभी नहीं भूल सकता । माता-पिता एवं परिवार की प्रेरणा के साथ हीमेरा मित्र परिवार आदि स्नेहीजनों का पर्याप्तसहकार्य है,जिनका मैं एहसान मंद हूँ । मैं टंकलेखनिक श्री बाळकृष्ण सावंत का भी तहेदिल से आभारी हूँ ।

जिनका इस कार्य को सम्पन्न बनाने में प्रत्यक्ष एवं परोक्ष सहयोग प्राप्त हुआ है उन सब के प्रति मै अपना आभार प्रकट करता हूँ और इसे विद्वानों के सामने परीक्षण के लिए प्रस्तुत करता हूँ।

स्थल: कोल्हापुर।

तिथि। १०। ७ ।१९९५।

शोध-छात्र

(श्री पाटील जे. बी.)